ईश्वरीय
खजाना
टीम
Presents

विशेष पुरुषार्थ

तीव्रता से आगे बढ़ने की श्रेष्ठ युक्तियां

यह श्रेष्ठ पुरुषार्थ की
भिन्न भिन्न युक्तियाँ
बाबा की रोज
जैसे मीठी थपकी है
अन्तर्मन में
जो समा ले इसे
जीवन में उसकी सफलता
शत प्रतिशत पक्की है...

माया-मुक्त ब्राह्मण जीवन के लिए

परमात्म इशारे

कर्मों में सफलता की युक्ति है...,
मास्टर त्रिकालदर्शी बनना।
कर्म करने से पहले
आदि, मध्य और अन्त को
जानकर कर्म करो,
ना कि कर्म करने के बाद
अन्त में परिणाम को देखकर फिर सोचो...!

(अव्यक्त महावाक्य - 01.03.1971)

Peace of Mind

CH. 1221 d2h
CH. 1087 dishtv
CH. 1065 TATA PLAY
CH. 678 airtel digital TV
CH. 496 SUN DIRECT

ड्रिलः अशरीरी स्थिति में न्यारा और बाप का प्यारा बनना

बापदादा- 20.10.2008

आज से सारे दिन में बार-बार कौन-सी ड्रिल करेंगे? अभी-अभी एक सेकण्ड में आत्म-अभिमानी, अपने शरीर को भी देखते हुए अशरीरी स्थिति में न्यारा और बाप का प्यारा अनुभव कर सकते हो ना! तो अभी एक सेकण्ड में अशरीरी भव! अच्छा।

(ड्रिल)

ऐसे ही बीच-बीच में सारा दिन में कैसे भी एक मिनट निकाल इस अभ्यास को पक्का करते चलो।

ओम् शान्ति

शिव भगवानुवाच - लाडले बच्चे, हमारे तख्त का मालिक बनो, हमारे ऊपर जीत प्राप्त करो। सपूत बच्चा वह है जो मां-बाप को पूरा फॉलो करें।

अति इन्द्रिय सुख में रहने वालों की निशानी क्या होगी?

अति इन्द्रिय सुख में रहने वाला कभी अल्पकाल के इन्द्रिय के सुख की तरफ आकर्षित नहीं होगा। जैसे कोई साहूकार रास्ते चलते हुए कोई चीज़ पर आकर्षित नहीं होगा - क्योंकि वह सम्पन्न है, भरपूर है। इसी रीति से अति इन्द्रिय सुख में रहने वाला इन्द्रियों के सुख को ऐसे मानेगा जैसे ज़हर के समान है। तो ज़हर की तरफ आकर्षित होते हैं क्या? ऐसे इन्द्रियो के सुख से सदा परे रहेंगे। मेहनत नहीं करनी पड़ेगी, लेकिन नॉलेजफुल होने के कारण उसके सामने वह तुच्छ दिखाई देगा। अगर चलते-चलते इन्द्रियों के सुख के तरफ आकर्षित होते, इससे सिद्ध है कि अति इन्द्रिय सुख की अनुभूति में कोई कमी है। इच्छा है लेकिन प्राप्ति नहीं। जिज्ञासु है, बच्चा नहीं। बच्चा अर्थात् अधिकारी, जिज्ञासु अर्थात् इच्छा रखने वाले। प्राप्त हो - यह इच्छा नहीं, लेकिन प्राप्त है - इस अधिकार की खुशी में रहने वाले। सदा इस अति इन्द्रिय सुख में रहो। इन्द्रियों के सुख का अनुभव कितने जन्म से कर रहे हो? उससे प्राप्ति का भी ज्ञान है ना? क्या प्राप्त हुआ? कमाया और गंवाया। जब गंवाना ही है तो फिर अभी भी उस तरफ आकर्षित क्यों होते? अति इन्द्रिय सुख की प्राप्ति का समय अभी भी थोड़ा है। यह अभी नहीं तो कभी नहीं मिलेगा। इसका सौदा अभी नहीं किया तो कभी नहीं कर सकेंगे। फिर भी सोचते रहते - छोड़े, नहीं छोड़े? बाप कहते हैं तो छोड़ो तो छूटे। कहते हैं छूटता नहीं है। पकड़ा खुद है और कहते हैं छूटता नहीं है। रचता तो आप हो ना। बार-बार ठोकर मत खाओ।

अव्यक्त बापदादा – 14-05-77

facebook.com/AvyaktMurliEssence

With the mantra "Nothing is new, I've been through this moment many times before,"questions can be transcended

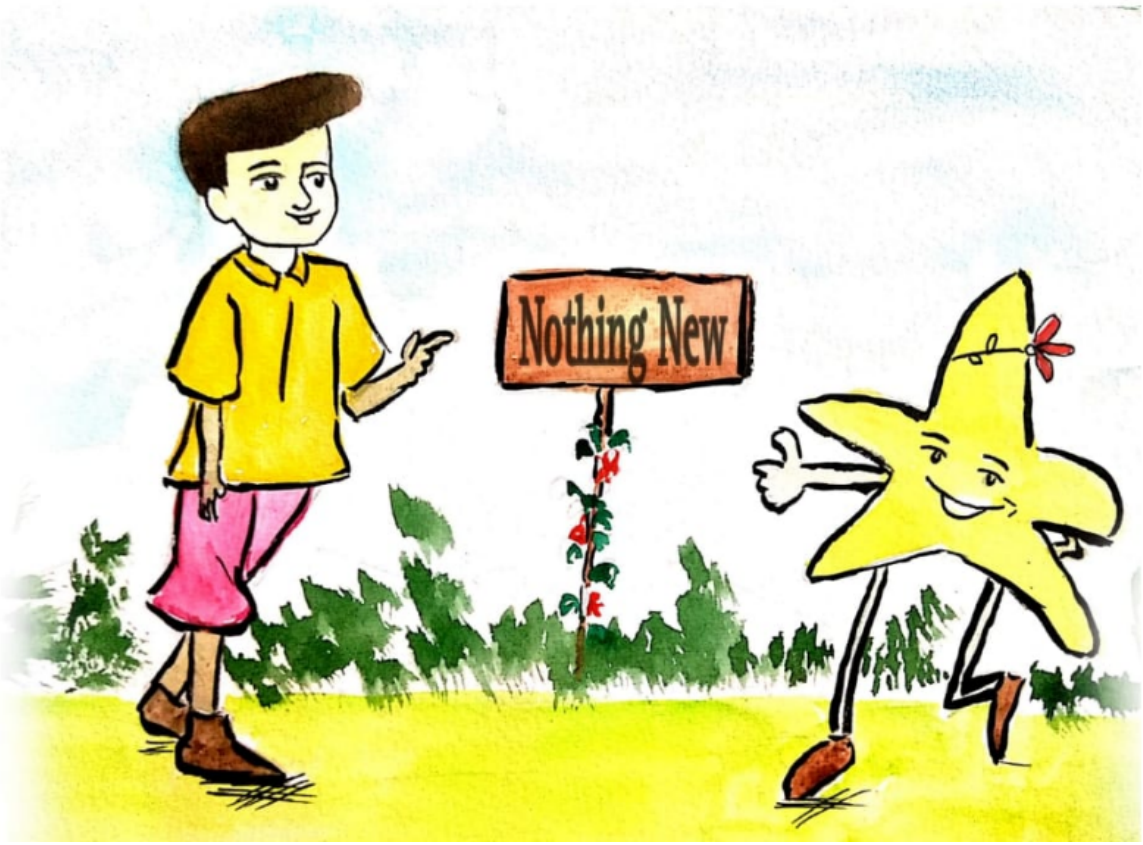

“आपने मेरा अपमान किया,
मुझे दुःख दिया...”

हम अपेक्षा रखते हैं,
वह माफी मांगें और वह बदलें।
यह हो भी सकता है और नहीं भी।

लेकिन एक चीज़ ज़रूर हो सकती है,
हम खुद से अच्छी बातें करें।

“उनका व्यवहार... उनके संस्कार हैं,
उसका मुझ पर कोई असर नहीं पड़ता”

BKShivani

B K S H I V A N I

I am responsible for my intentions & karma.
In response to my karma -
They are responsible for their feelings,
Based on their sanskars.

We cannot always meet others expectations.
Our right karma -
When perceived through their sanskars,
Can be labeled as wrong.

facebook.com/BKShivani | youtube.com/BKShivani

Brahma Kumaris Websites

Main BK website www.shivbabas.org OR www.brahmakumari.org (by SBS team)

Int'l website: www.brahmakumaris.org

India website: www.brahmakumaris.com

BK Sustenance website: www.bksustenance.net

All Data hosted on www.bkdrluhar.com

Murli Websites: babamurli.net and madhubanmurli.org

www.omshantimusic.net

www.bkgoogle.org

www.bksewa.org

www.bkinfo.in

www.bk.ooo

www.brahmakumari.org/centres

NEW www.IshvariyaKhajana.BKhq.org